BA (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पार्ट - थर्ड

Lecture - 1

प्रो० इन्द्रजीत कुमार राम
(अतिथि शिक्षक)
मैथिली विभाग
V.S.J. college, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

सुन्दरकाण्ड (सप्रसंग व्याख्या) :-

1 "धिक धिक रावण तोहर ज्ञान।
काल-निकट अनहित हित मान॥
जानिक त्रास कनि त्रिभुवन रूप।
हरि हरि हरि लपला की चूप॥"

प्रस्तुत चौपाइ कविश्वर चन्दाझाविरचित मिथिलाभाषा रामायणक सुन्दरकाण्ड सँ उद्धृत अछि।

रावण सीताक हरण क' लंकाक अशोक वनमे रखने छल। दशमुख रावण सीताकेँ अपन अधीनता स्वीकार करबा लेल कतेको उपाय कैल मुदा सीता स्वीकार नहि कैलनि। एक दिन रावण पुनि माता सीताक समीप सपत्नी आबैत छथि आ वचनसँ अनेक त्रास दैत अछि। तखन जनक नन्दिनी जे लंकापति के उत्तर देलनि - धिक्कार अछि अहाँक बल-बुद्धिक जे अपन कालकेँ स्वयं निरोज लेल अछि। जँ अहाँ ओतेक ज्ञानी आ प्रतापी छलहुँ त भिखारी बनि प्रपंच सँ हमर हरण किये कैल। निश्चित अछि प्रभु श्रीरामक भय अहाँक मनके बैसल छल। श्री रघुनन्दन त तीनू लोकक मालिक छिकाह। हुनका

से बचबाक साधारण लोक बुद्धि गलती क' रहल छइ। प्रभु श्रीराम अपन बाणक तेजसँ समुद्र सुखा रहल छथि। जखन तारा रूपमे श्रीराम कें सामने हैतह तखन तो सर-सम्बन्धी सहित मरबह। आओ दिन बहुत निकट आबि गेल छइ। एतेक सुनला पर रावण क्रोधान्ध भ' तलवारि लऽक सीताकें मारबाक लेल उद्यत् होइछ। मुदा मन्दोदरी रोकि लैत छथि।

2. "रावण रामहि सौं कहल,
उत्कट त्रास देखाय।
अनुकूला सीता करह,
जे बल बुद्धि उपाय॥"

प्रस्तुत दोहा मिथिलाभाषा रामायणक सुन्दर काण्ड सँ लेल गेल अछि। जिनकर रचयिता कविवर चन्दा झा। दशानन रावण द्वारा माता जानकीक हरण कैल गेलाक पश्चात हुनका अशोक वाटिकामे रखने छथि। लंकिनी लोकनिक पहरामे सीता बन्दिनी बनल छथि। मुदा माता सीता रावणक प्रस्तावके सतत अस्वीकार कऽ दैत अछि। रावण बेर-बेर आबि जनक नन्दिनीके प्रताड़ित कैने अछि। रावण कहैत अछि "पामर रामक त्यागू आशा। विद्यमान लंकेश्वर दास" मुदा माता जानकी हुनके गंजन करैत छथि। रावण अपन गंजनसँ क्रोधित भऽ तत्क्षणी सँ बन्दिनी सीताक

हत्याकरबाक पर तुलि जाइछ। परंच रावणक
अर्धांगिनी रोकि देत छलथि। नान्य एकटा
स्त्रीक हत्यासँ जगतमे अहाँके अपयश होएत अबला।
तखन, शांत भ रावण सीताक संग रक्षिका राक्षसीकेँ
आदेश देलथिन - अहाँ सभकेँ जेना भ सकै
तेना सीता केँ हमरा अनुकूल बनाऊ। एहि लेल
कठोर यातना देबाक जरूरति हुए तँ सेहो करू।
सब बल-बुद्धि लगाऊ। अहाँ सभकेँ दू मासक
समय दैत छी। एहि दू मास मे कहुना सीता हमरा
स्वीकार करथि। जँ दू-मास मे ई अनुकूल
नहि होथि त हिनक (विनाश निश्चित हैत)
आब सभ प्रहरी राक्षसी नाना तरहक त्रास
सीताकेँ देमए लागल। किओ कुठार लऽ कऽ
काटय आबए, त किओ जीहसँ शोणित चाटए
आबए, किओ खड्ग लऽ गरदनि दाबय आबए।
मुदा सीता माता सदैव अयुक्त रहली।

Samyit Kumar
20/08/20

हनुमानजीक पूर तेलि पाइल। परंच रावण
आधिकारिणी सोचि देल गेल। आब एक बलवान
सीताक हनुमान जानकी लगलैक अवश्य होयत।
रावण शोन मे रावण कुमार सँ रक्षित राखलिऐ
आदेश देलथिन - आहाँ मातृ जीना मे स्नेह
देना सीता कैं हमरा अनुकूल बनाउ। यदि लंक
करोड़ यातना देबाक जानकी उहो नहि डरि।
रावण बल-कौशल लगाउ। क्षमा हमर दुइ मासक
समय देल छी। यदि दु मासक कहना सीता हमर
स्वीकार करती। जे दु-मास मे ई अनुकूल
नहि होइथ त हिनक विनाश निश्चित होयत।
आब एक प्रहरी राक्षसी नाना तरहक त्रास
सीताकेँ देमए लागल। किओ कुमार सँ काटि
कार्य आबए, त किओ जीहसँ शोणित-चाटय
आबए, किओ खड्ग सँ गारदनि होयब आबए।
मुदा सीता माता सदैव जयपुत्र रहली।

Samjit Kumar
20/08/20